ੴ सति गुर प्रसादि ॥

सिक्ख जगद् को गुरमति शिक्षा

भूमिक

www.sikhworld.info

Donation : A/c HDFC : IFSC 0000450 04501570003814

प्रकाशक

क्रांतिकारी जगत् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लेखक जसबीर सिंघ Ph. : (0172-2696891), 09988160484

Type Setting : Radheshyam Choudhary Mob. 09814966882

Guru's : Sahidi, Hindi Booklet, Punjabi Booklet, English Booklet, Life Style, Mitra Mandali, Gurbani Ukakashari & Gurbani Selected Tukan

Download free

एक ओअंकार (ੴ) सति गुर प्रसादि

सिक्ख जगद् को गुरमति शिक्षा

भूमिका

सिक्ख जगद् को जितनी चुनौतियां वर्तमान काल में हैं, उतनी शायद पहिले कभी भी नहीं रही। क्योंकि पहिले शत्रु पक्ष स्पष्ट परगट रूप में दृष्टमान होता था और वे शक्ति का प्रयोग कर के सिक्खों को समाप्त करने का प्रयास करता रहता था, परन्तु जिन को सतिगुरू ने स्वयं संत सिपाही बनाया हो, उनको भला कौन मिट्टा सकता है। बहुत सी युक्तियां प्रयोग में लाई गई, अति घिनोने दमन चक्र चलाये गये, परन्तु उन दुष्टों को प्रत्येक बार मुंह की खानी पड़ी। भले ही खालसा पंथ को जंगलों में शरण लेनी पड़ी वहां पर कंद – मूल फल खा कर वर्षो भटकना पड़ा और घोड़ों की पीठ पर ही कई – कई दिन समय बिताना पड़ा। सिखर की यातनाएं झेलनी पड़ी।

अनगिनत बलिदान अथवा शहीदियां प्राप्त करनी पड़ी। परन्तु अंत में विजय खालसा पंथ के ही भाग्य में आई। वास्तव में उस समय खालसा पंथ के पास थी एकता जिस का स्रोत था गुर वाणि तथा गुरमति सिद्धांत । जिस के अधार पर उज्जवल जीवन चरित्र के स्वामी होना स्वाभाविक ही था। ऐसे ऊँचे आचरण ने सिक्खों को कभी भी पतन की ओर नहीं जाने दिया तथा दृढ़ अथवा अडोल, आत्मविश्वास से भरपूर रखा और सदैव विजय श्री प्राप्त करते हुए मानव समाज में अपना निशान साहब झुलाया।

अब शत्रु पक्ष ने नीति में परिवर्तन कर लिया है वे जान गया है कि जब तक सिक्खों के पास गुरुवाणी तथा उन का इतिहास मूल रूप में विद्यमान है उन को निष्क्रिय नहीं किया जा सकता अत: उन की विचारधारा में खोट मिला दिया जाये भावार्थ उन की गुरुवाणी तथा इतिहास को संदिग्ध कर दिया जाये तो वे भ्रमित होकर एकता के सूत्र से टूट कर विभाजित हो जायेगे जो कि उन के पतन का कारण बन सकता है। यह कार्य उन्होंने कुछ सत्ता के भूखे ऐसे लोगों से करवाया जिन की सूरत तो सिक्ख स्वरूप वाली थी परन्तु वे थे शत्रु पक्ष के प्रतिनिधि अर्थात शक्ल सिक्खों जैसी परन्तु

किरदार बिपरन (ब्रह्मण) जैसा। इस छल-कपट की राजनीति ने सिक्ख समाज को अपनों से ही विभाजित करवा दिया। सरकारी सहायता से स्थान-स्थान पर डेरावाद उत्पन हो गये जिन का सिक्खी से कोई लेन देना नहीं था। उनको तो सिक्ख समाज को भ्रमित कर के उन के माल से गुलछरे उड़ाने थे। इन दो नम्बर के संतों ने गुरवाणि के उपदेशों के विपरित अंधविश्वासों और कर्म काण्डों को इस प्रकार बढ़ावा दिया कि जन -साधारण तो क्या निष्ठावान सिक्ख (अमृतधारी) भी झांसे में आ गये क्योंकि उन का ज्ञान सिमित था। चाहिये तो यह था कि इन लोगों का तत्व गुरमति ज्ञान देकर सुदृढ जीवन शैली प्रदान की जाती परन्तु इन सरकारी डेरावाद ने केवल दूध में क्षार मिला कर सिक्ख सिद्धांतों से खिलवाड़ कर उनको मिल गोबा (मिलावट/खिचड़ी) बना कर रख दिया। बात यही तक सिमित न रही विश्व के समक्ष सिक्खों को हिन्दूतुत्व की एक शाखा बताने का असफल प्रयास किया। वास्वत में सरकारी परीयोजना यही है कि धीरे-धीरे सिक्खों को न्यारा खालसा न रहने दिया जाये। उन के साहित्य में मिलावट कर के इन लोगों को पगड़ीधारी हिन्दू घोषित कर दिया जाये। सरकारी तन्त्र ने कच्चे पिल्ले उन सिक्खों को जो सत्ता अथवा माया के भूखे थे, उन को खरीद लिया और उन से वही कार्य करवाये जिन कार्यो को करने के लिए गुरु ग्रंथ साहिब की वाणी बार-बार वर्जित करती है। इस प्रकार जनसाधारण को गुमराह किया जा रहा है और तत्व गुरमति ज्ञान में फिर से बिपरन की रीतियां धड़ले से डाली जा रही है। इस प्रकार उल्टी वाड़ खेत को ही खाई जा रही है।

स्वाभाविक ही है जनसाधारण शत्रु के षड्यन्त्र को समझ नहीं सकता वे तो केवल श्रद्धा-भक्ति के कारण पंथ दोखियों के डेरे को गुर घर जान कर सहज स्वभाव चले आते है जहां उन्हें परगट रूप में गुरुवाणी सुनाई तथा पढ़ाई जाती है परन्तु साथ ही में अंधविश्वासों और कर्मकाण्डों की ओर धकेल दिया जाता है जहां से वे फिर अपनी अज्ञानता वश वापस लोट नहीं सकते क्योंकि शत्रु पक्ष का बहुत बड़ा स्वार्थ इसी में रहता है कि एक तो उन की आय का स्रोत बना रहता है दूसरा वे लोग सरकारी पक्ष को प्रसन्न करने में सफल होते है तथा वहां से सभी प्रकार की आर्थिक व राजनीतिक सुविधाएं प्राप्त करते रहते है। इस प्रकार साधारण सिक्ख गुरमति के तत्व ज्ञान से वन्चित रह जाता है। गुरमति के शुभ गुणों के अभाव के कारण केवल श्रद्धा के बल पर कब तक सिक्खी पर पहरा देंगे। इसलिए वह लोग एक न एक दिन पतन की ओर बढ़े चले जाते हैं। वैसे भी समय भेड चाल का है।

वास्तव में आध्यात्मिक के दो पहलू है श्रद्धा और ज्ञान। इन में से एक की कमी व्यक्ति को विचलित कर देती है और वह केवल श्रद्धा अथवा ज्ञान के अभाव से पतन की तरफ चल पड़ता है। इस समय सभी सिक्ख संस्थाएं तथा पंथ दर्दी गुहार लगा रहे है कि पंथ खतरे में है परन्तु किसी को भी कुछ नहीं सूझ रहा कि पंथ की नयीयां भवर से कैसे बहार निकाले क्योंकि शत्रु पक्ष के पास सत्ता है वे लोग सिक्ख युवा पीड़ी को अपनी रची साजिश से समाप्त करने पर तुल्ले हुए हैं।

सभी पंथ दर्दी बहुत दुखी हैं परन्तु एकता के अभाव से अथवा कोई संयुक्त कार्यक्रम के न होने से कुछ हो नही पा रहा। पिछले दिनों केन्द्रिय सिंघ सभा द्वारा कुछ गति-विधियां की गई थी परन्तु जब सत्ताधारियों को इस की भणक लगी तो उन्होंने राजनीति के सभी हथकन्डे **(साम – दाम – दण्ड – भेद)** इत्यादि प्रयोग कर सब कुछ कुचल कर रख दिया। वास्तव में 'जिस का राज उसी का तेज' या इस प्रकार कहा जा सकता है 'राज बिना न धर्म चले है, धर्म बिना सब दले मले है'।

केन्द्रिय तथा प्रदेशिक स्वार्थी सत्ताधारियों के गुप्त संकेतों के कारण सभी प्रकार के नशों की बाड़ पंजाब में आई हुई है जिस के प्रकोप से हमारी युवा पीड़ी शरीरिक, मानसिक तथा आत्मिक पतन की ओर बढ़ती जा रही है परन्तु हम कुछ कर नही पा रहे। 'साबुत सूरत दसतार सिरा' युवक कहीं डून्डने पर ही बहुत मुश्किल से दृष्टिगौचर होता है। ऐसे में हमारे पास केवल एक रास्ता बचता है हम सभ पंथ दर्दी अपने-अपने 'दसवंद' से शुद्ध गुरमति साहित्य तैयार करवा कर पतित सिक्ख युवकों में मुफ्त बांटे। जिस से उन को गुरमति का ज्ञान हो सके और वे वापस लोट आये। परन्तु हमें साहित्य तैयार करवाने में कुछ सावधानियां रखनी होगी, क्योंकि आज लोगों में साहित्य पढ़ने में रूची नही रही अत: हमें गुरमति साहित्य तैयार करते समय रोचक साहित्य की सृजना करनी होगी और समय अनुकूल केवल एक विषय वस्तु पर आधारित कई भाषों में उसी लघु पुस्तिका को पाठक की भूल भाषा का ज्ञान कर उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करना होगा।

इस समय यह पुस्तक **'सिक्ख जगद् को गुरमति शिक्षा'** नाम से प्रकाशित की जा रही है जिस का उद्देश्य केवल यही है कि जनसाधारण को गुरमति के भूल सिद्धांतों से अवगत करवाया जा सके। जो कि केवल मानववाद के पक्षधर है और अंधविश्वासों से हमें मुक्ति दिलवाते हैं और केवल एक प्रभु में आस्था रखते हैं।

जागृत सिक्ख जगद् तो इस बात को जानता है कि कच्ची और पक्की वाणी अथवा साहित्य का यदि विश्लेषण करना हो तो हमारे पास श्री गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी का सिद्धांत ही एक कसोटी है जिस को आधार मान कर खोटे साहित्य से सिक्ख जगद् को बचाया जा सकता है।

यह पुस्तक जो आप के समक्ष प्रस्तुत की जा रही है। इस में गुरमति के प्रारम्भिक सिद्धांतों को उज्जागर किया है जो कि प्रत्येक सिक्ख के लिए अनिवार्य है। अकाल पुरुष कृपा दृष्टि करें यह तुच्छ कार्य पंथ की सेवा में कोई अंश मात्र योगदान डाल सके।

राजिन्दर सिंघ

संयोजक शिरोमणी खालसा पंचायत

नोट –

इस सम्पूर्ण पुस्तक को इसी वैबसाईट के मैंन लिंको में हिन्दी तथा पंजाबी दोनों भाषाओं में डाल दिया जाएगा।

लेखक

जसबीर सिंघ फोनः 099881-60484

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob.: 098149-66882